



प्रवासी साहित्य में महिला लेखिकाओं का स्त्री पक्ष

कंचन शामदिया

शोधार्थी (हिन्दी विभाग), राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रवासी साहित्य में महिला लेखिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रवासी हिंदी साहित्य आज समृद्ध हो चुका है। आज प्रवासन की प्रक्रिया हमारे समक्ष दूसरे रूपों में प्रस्तुत है। महिला रचनाकारों ने अपनी रचना के माध्यम से प्रवासी लोगों के जीवन के विविध पक्षों को बहुत ही बेबाकी से प्रस्तुत किया है। प्रवासी हिन्दी साहित्यकार ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, गुयाना, मॉरिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद आदि स्थानों को अपनी कर्मभूमि स्वीकार कर साहित्य सृजन करते आये हैं। उन्होंने विदेशों को अपनी कर्मभूमि बनाया है। 20वीं सदी में प्रवासी भारतीयों ने भारतीयता की अस्मिता को जिन्दा रखने की भरसक कोशिश की है। प्रवासी साहित्य पहले जो उपलब्ध था, उससे आज का प्रवासी साहित्य एकदम अलग है। प्रवासी हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत कहानी, उपन्यास, कविताएं, नाटक, निबन्ध, एकांकी, महाकाव्य, खण्डकाव्य, अनुदित साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्मकथा आदि का सृजन हुआ है।

प्रवासी साहित्य की सबसे विशिष्ट बात यह है कि वहाँ महिला साहित्यकारों की भागीदारी पुरुष साहित्यकारों से अधिक है, तथा वह भारतीय महिला लेखन की भाँति हाशिये पर नहीं खड़ा है और न ही किसी एक बनी-बनायी परिपाटी को लेकर चल रहा है, बल्कि अपनी विषय वैविध्यता के कारण मुख्य धारा में सम्मिलित है। यह मात्र स्त्री संवेदना को ही नहीं व्यक्त करता बल्कि पश्चात्य परिवेश से जूझ रहे प्रत्येक व्यक्ति की संवेदना को स्वर प्रदान करता है। प्रवासी साहित्य में महिला लेखिकाओं का स्त्री पक्ष बहुत ही मजबूत साबित हो रहा है। प्रवासी साहित्य में अपनी लेखनी के दम पर अपनी पहचान को स्थापित करती हैं। इनके लेखन कार्य की जितनी भी प्रशंसा की जाय वह उतना ही कम है।

मूलशब्द: प्रवासी साहित्य, प्रवासी विमर्श, प्रवासी समाज, प्रवासी की प्रक्रिया, पुनर्मूल्यांकन

प्रस्तावना

प्रवासी हिंदी साहित्य: हिंदी साहित्य में जुड़ती एक नवीन विधा एवं चेतना है जो प्रवासियों के मनोविज्ञान से जुड़ी है, जो न केवल एक नई विचारधारा है बल्कि एक नई अंतर्दृष्टि भी है, जिसे अपनी जगह बनाने में पर्याप्त समय लगा है। प्रवासी साहित्य की परम्परा बहुत पुरानी

नहीं है, किंतु फिर भी प्रवासी साहित्य अपनी संवेदनात्मक रचनाधर्मिता से साहित्य के क्षेत्र में गहरी जड़ें जमा चुका है। भारत से दूर अन्य देशों में बसे भारतीयों के अथक प्रयासों से ही आज प्रवासी साहित्य समृद्ध और सशक्त बन पाया है।

विगत कुछ वर्षों से प्रवासी साहित्य तथा साहित्यकारों को केंद्र में रखकर विचार-विमर्श जारी है। भारतीय मूल के लोग समस्त विश्व में फैले हुए हैं। प्रवासी हिंदी साहित्यकार ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, गुयाना, मॉरिशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद (वेस्ट इंडिज़) आदि स्थानों को अपनी कार्यभूमि स्वीकार कर साहित्य सृजन करते आए हैं। उन्होंने विदेशों को अपनी कर्मभूमि बनाया है। बीसवीं शती में प्रवासी भारतीयों ने भारतीयता की अस्मिता को जिंदा रखने की भरसक कोशिश की है। प्रवासी साहित्य जो पहले उपलब्ध था उससे आज का प्रवासी साहित्य एकदम अलग है। प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत कविताएँ, उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, एकांकी, महाकाव्य, खंडकाव्य, अनूदित साहित्य, यात्रा वर्णन, आत्मकथा आदि का सृजन हुआ है। प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं द्वारा नीति-मूल्य, मिथक, इतिहास, सभ्यता के माध्यम से 'भारतीयता' को सुरक्षित रखा है। 'हिंदी' को प्रवाहित रखा, जिंदा रखा है। कमलेश्वर ने प्रवासी साहित्य पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि 'रचना अपने मानदंड खुद तय करती है इसलिए उसके मानदंड बनाए नहीं जाएंगे। उन रचनाओं के मानदंड तय होंगे।'

प्रवासी साहित्य की खास विशेषता है कि प्रत्येक सुख-सुविधाओं के साथ-साथ विदेशी भूमि पर देशी चूल्हा जलने से घर की रोटी की सुगंध आती है तथा यह भी ध्यान रखने योग्य बात है कि परायी भूमि को कर्मक्षेत्र बना लेने से न तो घर की रोटी की सुगंध भूली जा सकती है और न ही पराया समाज और संस्कृति अपना लेने से अपनी मातृभूमि के प्रति प्रेम समाप्त हो सकता है एवं न ही अपनी देशी आत्मा विदेशी में परिवर्तित हो सकती है। प्रवासी साहित्य की सबसे विशिष्ट बात यह भी है कि वहाँ महिला साहित्यकारों की भागीदारी पुरुष साहित्यकारों से अधिक है तथा वह भारतीय

महिला लेखन की भाँति हाशिए पर नहीं खड़ा है, और न ही किसी एक बनी-बनायी परिपाटी को लेकर चल रहा है, बल्कि अपनी विषय-वैविध्यता के कारण मुख्यधारा में सम्मिलित है। यह मात्र स्त्री संवेदना को ही व्यक्त नहीं करता बल्कि पाश्चात्य परिवेश में जूझ रहे प्रत्येक व्यक्ति की संवेदना को स्वर प्रदान करता है, इनमें बच्चे, बूढ़े, पुरुष, समलैंगिक, अंतर्नस्लीय, उच्चवर्गीय, मध्यवर्गीय व्यक्ति एवं परिवार तथा मस्तमौले विदेशी भिखारी भी परिवेशगत स्थान पाते हैं। भारत में महिला-लेखन अभी चौखट पार कर रहा है, किंतु प्रवास में महिला लेखन भूमंडल में टहल रहा है। वह देख रहा है वहाँ के सच्चाइयों को, मूल्यों को, यथार्थ को और ढूँढ़ रहा है संवेदना का अंतःसूत्र। डॉ. प्रीत अरोड़ा अपने लेख 'प्रवासी साहित्य की कहानियों में यथार्थ और अलगाव के द्वन्द्व' में लिखती हैं -

“आज भारत में लिखी जा रही अधिकांश हिन्दी कहानी स्त्री-विमर्श के नाम पर दैहिक विमर्श करती नज़र आती है। जबकि प्रवासी कहानियाँ मानवीय यथार्थ के भीतर मूल्यों की तलाश करती नज़र आती हैं”²

भारत में जहाँ आधी आबादी का साहित्य अभी धीरे-धीरे घर की चौखट लाँघकर समाज, देश और राजनीति की ओर कदम बढ़ा रहा है वहीं प्रवास की आधी आबादी के विषय को किसी एक साँचे या किसी एक विमर्श में बाँधकर नहीं देखा जा सकता। इनके साहित्य में उत्तर-आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वृद्धा विमर्श, पुरुष-विमर्श, स्त्री-विमर्श तथा मूल रूप से प्रवासी-विमर्श के रूप में हिन्दी साहित्य में अपना स्थान बना रहा है। ये कथाएँ भारतीय और पाश्चात्य समाज और संस्कृति, परिवेश, भाषा और परंपरा का, मनोविज्ञान और मानवीयता का, संवेदना और वेदना का, मानव जीवन के सहजता और असहज घात-प्रतिघातों को चित्रित कर रही हैं। राजेन्द्र यादव ने प्रवासी साहित्य को इसीलिए 'संस्कृतियों के संगम की

¹ डॉ. कमल किशोर गोयनका, हिंदी का प्रवासी साहित्य, प्रथम संस्करण 2011, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, पृष्ठ, 47

² (himalin.com/himalininews/प्रवासी -साहित्य-की-कहानी.html?source=refresh, 12 jan, 2014,

खूबसूरत कथाएं³ कहा है। हालांकि यह केवल संगम नहीं है बल्कि कई अर्थों में तो मुठभेड़ है।

जहां तक प्रश्न विदेशों में रचे जा रहे हिन्दी साहित्य का है तो वहां यह तथ्य स्पष्ट तौर पर उभर कर सामने आता है कि विदेशी धरती पर प्रवासी भारतियों की पीढियां भले ही गुजर रही हों लेकिन अपनी मूल माटी, अपने मूल भारतीय संस्कारों और मूल भारतीय विचारों से वे आज भी कटे नहीं हैं। इसी तथ्य का दूसरा पक्ष उन स्त्रियों से जुड़ा हुआ है जो भारतीय मूल की हैं और प्रवासी के रूप में विदेशों में जीवनयापन कर रही हैं। इन स्त्रियों को अपनी मूल संस्कृति का भी पोषण करना होता है और जहां रह रही होती हैं वहां की संस्कृति के अनुरूप भी स्वयं को ढालना होता है। ऊपरी तौर पर देखने से यही प्रतीत होता है कि भारत में पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव इतना अधिक पैर पसार चुका है कि अब भारतीय लड़कियों या स्त्रियों को विदेशी भूमि में जा कर बसने में कठिनाई का अनुभव पहले की अपेक्षा बहुत कम होता होगा। किन्तु प्रवासी महिला कथाकारों की कहानियों में जो स्त्री उभर कर सामने आती है, वह एक अलग ही जीवन-कथा कहती है। यह जीवन कथा स्त्री के अंतर्द्वन्द्व की है, यह जीवन कथा दो भिन्न संस्कृतियों के बीच मालमेल बिठाते रहने की है, यह जीवन-कथा स्त्री के उस पक्ष की है जिसमें वह स्वतंत्र दिखती है किन्तु अपने जातीय (भारतीय) संस्कारों के कारण स्वयं को पाश्चात्य शैली में स्वतंत्र कर नहीं पाती है। इस प्रकार वह दोहरे दायित्व को वहन करती रहती है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य आज इतना समृद्ध है जिसमें, प्रवासी लेखिकाओं की भी महती भूमिका रही है। कई स्त्री रचनाकारों ने विदेशों में रहकर भारतीयों के जीवन के विविध-पक्षों को उद्घाटित किया है। प्रवासी भारतीय रचनाकारों में महिला कथाकारों की भूमिका सबसे

महत्वपूर्ण कही जा सकती है। इन कथाकारों ने विदेशों में बसने वाली भारतीय स्त्रियों के मानसिक, सांस्कृतिक और वैचारिक संघर्ष को बड़े ही विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। प्रवासी महिला कथाकारों में प्रमुख नाम हैं -अमेरिका की उषा प्रियवंदा, सुषम बेदी, सुधा ओम ढींगरा, पुष्पा सक्सेना, इला प्रसाद, रचना सक्सेना, सोमा वीरा, सीमा खुराना आदि, कनाडा की शैलजा सक्सेना, डेनमार्क की अर्चना पैन्थूली, फ्रांस की सुचिता भट, ब्रिटेन की उषा राजे सक्सेना, उषा वर्मा, जकिया जुबैरी, अचला शर्मा, कादम्बरी मेहरा, दिव्या माथुर आदि, संयुक्त अरब अमीरात की पूर्णिमा वर्मन, स्वाती भालोटिया आदि, कुवैत की दीपिका जोशी आदि। ये सभी लेखिकाएं स्त्री-जीवन के विविध पहलुओं पर गंभीरता से दृष्टिपात करते हुए सम्पूर्ण समाज के आचरण की गहराई से चिन्तन करती हैं। स्त्री-विमर्श को ध्यान में रखा जाए तो प्रवासी साहित्य में स्वानुभूति और सहानुभूतिपरक साहित्य समान रूप से दृष्टिगत होता है।

उषाराजे सक्सेना विख्यात प्रवासी हिन्दी साहित्यकार हैं। इंग्लैंड को कर्मभूमि बनाकर प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों में इन्होंने काफी सक्रियता रखी है। इनके साहित्य में भारत, भारतीय संस्कृति, सभ्यता, भाषा के प्रति हर तरह के अनुभव तथा विचार एवं विशेषकर स्त्रियों से सम्बंधित विभिन्न दृष्टिकोण प्रकट होते दिखाई देते हैं। इनके दो कविता संग्रह, एक कहानी संकलन, कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। संप्रति वे ब्रिटेन की 'पुरवाई' नामक पत्रिका की संपादक हैं। इनके लेखन में आशा की संभावना नजर आती है। इन्होंने अपने समय तथा समाज की विडम्बना और सत्य को अपने लेखन में अभिव्यंजित करने की कोशिश की है। अधिकतर पश्चिमी समाज की विसंगति तथा स्त्री-संघर्ष इनके लेखन द्वारा अभिव्यक्त हुई है। उषा राजे सक्सेना की

³ -(www.pravasiduniya.com/nri-literature-and-woman-dr.anita-kapoor-america, 7 March, 2012.

कहानी 'वो रात' बेहद चर्चित कहानी रही है। एक मां और उसके छोटे बच्चों के साथ कल्याणकारी राज्य की भूमिका पर केंद्रित इस कहानी की मर्मस्पर्शी संवेदना झकझोर देती है। इला प्रसाद की कहानी 'ई-मेल' और 'एक अधूरी प्रेमकथा' अपने आप में संचार और हॉस्टल की कहानी को समेटते हुए आधुनिक युग की क्षणिक अनुभूति की कहानी है।

सुषम बेदी का 'हवन' और 'मैंने नाता तोड़ा' उपन्यास काफी चर्चा में रहा है। इसमें अमेरिका के परिवेश में एक विधवा स्त्री के जीवन को दिखाया गया है। इसके अलावा इनके कहानी संग्रह 'चिड़िया और चील' ने भी पर्याप्त ख्याति पाई है। जकिया जुबैरी के कहानी संग्रह 'सांकल' में स्त्री मन की कशमकश को चित्रित किया गया है। जकिया जी की कहानियों में नॉस्टेल्लिजिया और वहां परिवार के बीच की स्थितियों का मार्मिक चित्रण मिलता है। मां और बेटी के अलावा, मां और पुत्र के बीच स्वाभिमान को बहुत ही संवेदनशील ढंग से उकेरा गया है। सांकल के अलावा 'मारिया' और 'लौट आओ तुम' ऐसी ही कहानियां जिनमें स्त्री विडम्बनाओं का मार्मिक चित्रण हुआ है। नीना पॉल ने दो उपन्यास 'तलाश' और 'कुछ गांव-गांव कुछ शहर-शहर' लिखे हैं। इसके अलावा उनके दो कहानी संग्रह भी हैं। 'कुछ गांव-गांव कुछ शहर-शहर' उपन्यास में इंग्लैंड के लेस्टर शहर के बनने की कहानी के साथ-साथ गुजरातियों के वहां जमने और संघर्ष करने को गुंथा गया है। उपन्यास में निशा के माध्यम से एक गुजराती परिवार की तीन पीढ़ियों का संघर्ष दिखाया गया है। इस उपन्यास की विशेषता यह है कि इसमें उपन्यासकार ने संतुलित और निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया है।

दिव्या माथुर की शुरुआती कहानियों में कहानी का शिल्प कम और संवेदना अधिक है अर्थात् कहानी में चरित्र-चित्रण, संवाद, वातावरण की अपेक्षा, वे कथ्य पर फोकस करती हैं। 'तमन्ना' कहानी में एक ऐसी भारतीय बहू की कथा है, जो लगातार तनाव में है। झांसी में

उसका एक सड़कछाप प्रेमी था, जो शादी के बाद भी उसे धमकी भरे खत लिखता है। 'पंगा और अन्य कहानियां' तथा '2050' जैसी कहानियों तक पहुंचते-पहुंचते उनके कहानियों में शिल्प का प्रबल आग्रह दिखाई देने लगता है। सुधा ओम ढींगरा ने 'कौन सी जमीन अपनी' कहानी संग्रह से अपनी जगह बनाई। सुधाजी का लेखन एक सांस्कृतिक सेतु की तरह है। 'टारनेडो' कहानी भारत की याद और उसकी खुशबू की कहानी है, 'वहीं क्षितिज से परे' कहानी में एक प्रताड़ित स्त्री के विद्रोह को दर्शाया गया है। 'सुधा ओम ढींगरा' की कहानियों की यही विशेषता है कि उसमें आदर्श का संसार भी है, परंतु वह मूल रूप से यथार्थ की जमीन पर खड़ा है। इनकी रचना 'कमरा नं. 103' की मिसेज वर्मा परदेश में एकदम अकेली हो जाती हैं क्योंकि बेटा-बहु घर में लगे जाले की तरह उन्हें उतार फेंकते हैं, जिससे उनके जीवन का उद्देश्य समाप्त हो गया। यदि समग्र प्रवासी साहित्य पर दृष्टि डाली जाए तो यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि प्रवासी महिला कथाकार पूरी संवेदना और गंभीरता के साथ कथालेखन में संलग्न हैं और उनकी कहानियों में मिलने वाली स्त्रियां दो विपरीत संस्कृतियों के बीच सेतु बन कर संघर्षरत रहने की मर्मस्पर्शी कथा कहती हैं। ये स्त्रियां कहीं से भी लाचार या थकी हुई नहीं हैं, वे सक्षम हैं अपने लिए रास्ता ढूँढने में और भावी पीढ़ी को रास्ता दिखाने में। वस्तुतः प्रवासी महिला कथाकारों की ये कहानियां हिन्दी साहित्य का महत्वपूर्ण एवं अभिन्न हिस्सा हैं।

जकिया जुबैरी की कहानी 'मेरे हिस्से की धूप', सुधा ओम ढींगरा की कहानी 'आग में गर्मी कम क्यों है?', 'टारनेडो', 'क्षितिज से परे...', 'बेघर सच', सुषम बेदी की 'काला लिबास', 'तीसरी दुनिया का मसीहा', 'सड़क की लय', उषा वर्मा की 'सलमा', अनिल प्रभा कुमारी की 'घर', पुष्पा सक्सेना का 'विकल्प कोई नहीं', सुदर्शन प्रियदर्शिनी की 'धूप', अचला शर्मा की 'चौथी ऋतु', नीरा त्यागी की 'माँ की यात्रा', दिव्या माथुर की 'सफरनामा'

आदि कहानियों में स्त्री का यथार्थ प्रमुख रूप से तीन रूपों में सामने उभर कर आया है: 1. भारतीय संस्कारों का आत्मसातीकरण, 2. मानवीय संवेदना और मानवीय मूल्यों की खोज, तथा 3. अस्मिता के प्रति जागरूकता। भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्त्री-विमर्श धर्म, नैतिकता तथा दैहिकता के दायरे से बाहर निकलने के लिए फड़फड़ा रहा है क्योंकि भारतीय संस्कार स्त्री-जीवन में नीर-क्षीर की भाँति इस प्रकार रच-बस गया है। सिमोन द बोउवार का कथन 'स्त्री स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है', भारत में विशेष रूप से चरितार्थ है। कदाचित् यही कारण है कि भारतीय महिलाएँ विदेश में अपने संस्कारों को भूल नहीं पातीं। 'न भेज्यो विदेस' की नायिका रती और गुरमीत बिशन सिंह से प्रदत्त षडयंत्रों से उत्पन्न समस्याओं से निरंतर जूझते हुए भी पति-परमेश्वर की अवधारणा से मुक्त नहीं हो पाती और मूक बनकर जीवन गुज़ारती है।

प्रवासी कथाओं में नारी के तीन रूप उभरकर सामने आए हैं। पहला, पाश्चात्य परिवेश में इस प्रकार ढल जाना कि नारी का विकृत रूप दर्शाता है अथवा पाश्चात्य परिवेश की विकृतता पाठकों के सामने आती है, जैसे 'टारनेडो' की जैनेफर या 'काला लिबास' में अनन्या की माँ, जो अपने मूल्यहीन स्वच्छंद जीवन को ही इतना मूल्यवान मानने लगती हैं कि अपने बच्चों तक का ध्यान नहीं रख पातीं, जिससे बच्चे पथभ्रष्ट हो जाते हैं। दूसरा, प्रवासी नारी भारतीय एवं पाश्चात्य परिवेश में सामंजस्य बनाकर आगे बढ़ने का प्रयास करती है। जैसे 'हवन' की गुड्डो, 'सड़क की लय' की नेहा, 'धूप' की रेखा, 'टारनेडो' की वंदना, 'आग में गर्मी कम क्यों है' की साक्षी, 'मेरे हिस्से की धूप' की शम्मो आदि। तीसरा, स्त्री या तो निराशाजन्य स्थिति में अवसादग्रस्त हो गई है अथवा विद्रोहिणी बन गई है। 'न भेज्यो विदेस' की गुरमीत और 'सांकल' की सीमा अवसादग्रस्त हो जाती हैं, तो 'काला लिबास' की अनन्या, 'टारनेडो' की क्रिस्टी, 'घर' की नादिरा, 'क्षितिज से परे...' की सारंगी, 'हवन' की

तनिमा आदि नायिकाएँ विद्रोही बन जाती हैं। सुदर्शन प्रियदर्शिनी तथा ज़किया जुबैरी की नायिकाएँ कहानी के अंत तक परिस्थिति के साथ ताल-मेल बैठा लेती हैं। इला प्रसाद की नायिकाएँ अंत में रोज़मर्रा के जीवन में लिप्त हो जाती हैं। सुषम बेदी की नायिकाएँ अलग-अलग स्वभाव की होती हैं, वे जुझारू भी हैं, भावुक भी, विद्रोही भी तथा सुधा ओम ढींगरा की नायिकाएँ कहानी के अंत तक आते-आते सशक्त रूप ले लेती हैं, वे परिस्थितियों से हार नहीं मानतीं बल्कि उनमें समस्याओं से लड़ने की क्षमता एवं जीजिविषा जाग उठती है। किंतु ये सभी नायिकाएँ अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक हैं।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि एक परिघटना के रूप में यह साफ दिखाई देता है कि पूरे प्रवासी साहित्य की बागडोर स्त्री रचनाकारों के हाथों में है। एक नई दुनिया का पता और उसकी आंतरिक गतिविधियों की सूचना इन कथाकारों की कहानियों और उपन्यासों से पाठकों को मिलाती है। इन कथाकारों की रचनाशीलता ने हिन्दी साहित्य का परिदृश्य और विस्तृत किया है। स्पष्ट है कि प्रवासी साहित्य अत्यंत संपन्न है। प्रवासी लेखिकाएँ भी अपनी अलग पहचान बनाकर सृजनरत हैं। हम इनके साहित्य को पढ़कर विदेशों में रहने वाली स्त्रियों के अनुभवों, भावनाओं, संवेदनाओं से जुड़ सकते हैं। इन लेखिकाओं के साहित्य का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि भूमंडलीकरण के हाहाकार में बढ़ती यांत्रिकता और मनुष्य की संवेदनहीनता ने इन्हें अंदर से झकझोर दिया है, जिससे इन्होंने अपनी जड़ों को मज़बूत बनाते हुए मन की अथाह गुफा में भारतीय मूल्यों का पुनर्मूल्यांकन एवं पुनर्स्थापित किया है। विषय-वैविध्यता तथा एक ही विषय में संवेदना की वैविध्यता का उदाहरण इनकी कहानियों में साफ़-सुथरा एवं सुन्दर ढंग से प्रस्तुत हुआ है।

सन्दर्भ-सूची

1. सिंह, कुंवर पाल . वर्तमान साहित्य . नमिता सिंह (संपादक). प्रवासी हिंदी लेखन तथा भारतीय हिंदी
2. सक्सेना, उषा राजे . लेखन. (जनवरी, फरवरी 2006)
3. डॉ. गोयनका, कमल किशोर. (2011). हिंदी का प्रवासी साहित्य . गाजियाबाद: अमित प्रकाशन. प्रथम संस्करण
4. https://vishwahindijan.blogspot.com/2017/02/blog-post_35.html
5. पॉल, नीना . कुछ गांव-शहर कुछ शहर-शहर . दिल्ली: यश पब्लिकेशन्स
6. बेदी, सुषम . चिड़िया और चील . दिल्ली: अभिरुचि प्रकाशन